शाबर-मन्त्र

मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।।

शाबर-मन्त्र-अनुभूत-प्रयोग

१. हनुमान रक्षा-शाबर मन्त्र
"ॐ गर्जन्तां घोरन्तां, इतनी छिन कहाँ लगाई ? साँझ क वेला, लौंग-सु□ारी-□ान-फूल-इलायची-धू□-दी□-रोट̲लँगोट-फल-फलाहार मो□ माँगा। अञ्जनी-□ुत्र प्रता□-रक्षा-कारण वेगि चलो। लोहे की गदा कील, चं चं गटका चक कील, बावन भैरो कील, मरी कील, मसान कील, प्रेत-ब्रह्म-राक्षस कील, दानव कील, नाग कील, साढ़ बारह ता□ कील, तिजारी कील, छल कील, छिद कील, डाकनी कील, साकनी कील, दुष्ट कील, मुष्ट कील, तन कील, काल-भैरो कील, मन्त्र कील, कामरु देश के दोनों दरवाजा कील, बावन वीर कील, चौंसठ जोगिनी कील, मारते क हाथ कील, देखते क नयन कील, बोलते क जिह्वा कील, स्वर्ग कील, □ाताल कील, □ृथ्वी कील, तारा कील, कील बे कील, नहीं तो अञ्जनी माई की दोहाई फिरती रहे। जो करै वज्र की घात, उलटे वज्र उसी □□रै छात फार के मरै। ॐ खं-खं-खं जं-जं-जं वं-वं-वं रं-रं-रं लं-लं-लं टं-टं-टं मं-मं-मं। महा रुद्राय नमः। अञ्जनी-□ुत्राय नमः। हनुमताय नमः। वायु-□ुत्राय नमः। राम-दूताय नमः।"

विधिः- अत्यन्त लाभ-दायक अनुभूत मन्त्र है। १००० □ाठ करने से सिद्ध होता है। अधिक कष्ट हो, तो हनुमानजी का फोटो टाँगकर, ध्यान लगाकर लाल फूल और गुग्गूल की आहुति दें। लाल लँगोट, फल, मिठाई, ५ लौंग, ५ इलायची, १ सु□ारी चढ़ा कर □ाठ करें।

२. गोरख शाबर गायत्री मन्त्र
"ॐ गुरुजी, सत नमः आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐकारे शिव-रु□ी, मध्याह्ने हंस-रु□ी, सन्ध्यायां साधु-रु□ी। हंस, □रमहंस दो अक्षर। गुरु तो गोरक्ष, काया तो गायत्री। ॐ ब्रह्म, सोऽहं शक्ति, शून्य माता, अवगत □िता, विहंगम जात, अभय □न्थ, सूक्ष्म-वेद, असंख्य शाखा, अनन्त प्रवर, निरञ्जन गोत्र, त्रिकुटी क्षेत्र, जुगति जोग, जल-स्वरु□ रुद्र-वर्ण। सर्व-देव ध्यायते। आए श्री शम्भु-जति गुरु गोरखनाथ। ॐ सोऽहं तत्□ुरुषाय विद्महे शिव गोरक्षाय धीमहि तन्नो गोरक्षः प्रचोदयात्। ॐ इतना गोरख-गायत्री-जा□ सम्□ूर्ण भया। गंगा गोदावरी त्र्यम्बक-क्षेत्र कोलाञ्चल अनु□ान शिला □र सिद्धासन बैठ। नव-नाथ, चौरासी सिद्ध, अनन्त-कोटि-सिद्ध-मध्ये श्री शम्भु-जति गुरु गोरखनाथजी कथ □ढ़, ज□ के सुनाया। सिद्धो गुरुवरो, आदेश-आदेश।।"

साधन-विधि एवं प्रयोगः-
प्रतिदिन गोरखनाथ जी की प्रतिमा का □ंचो□चार से □ूजनकर २१, २७, ५१ या १०८ ज□ करें। नित्य ज□ से भगवान् गोरखनाथ की कृ□ा मिलती है, जिससे साधक और उसका □रिवार सदा सुखी रहता है। बाधाएँ स्वतः दूर हो जाती है। सुख-सम्□त्ति में वृद्धि होती है और अन्त में □रम □द प्राप्त होता है।

३. दुर्गा शाबर मन्त्र
"ॐ ह्रीं श्रीं चामुण्डा सिंह-वाहिनी। बीस-हस्ती भगवती, रत्न-मण्डित सोनन की माल। उत्तर-□थ में आ□ बैठी, हाथ सिद्ध वाचा ऋद्धि-सिद्धि। धन-धान्य देहि देहि, कुरु कुरु स्वाहा।"

विधिः- उक्त मन्त्र का सवा लाख ज□ कर सिद्ध कर लें। फिर आवश्यकतानुसार श्रद्धा से एक माला ज□ करने से सभी कार्य सिद्ध होते हैं। लक्ष्मी प्राप्त होती है, नौकरी में उन्नति और व्यवसाय में वृद्धि होती है।

४. लक्ष्मी शाबर मन्त्र
"विष्णु-प्रिया लक्ष्मी, शिव-प्रिया सती से प्रकट हुई। कामाक्षा भगवती आदि-शक्ति, युगल मूर्ति अ□ार, दोनों की प्रीति अमर, जाने संसार। दुहाई कामाक्षा की। आय बढ़ा व्यय घटा। दया कर माई। ॐ नमः विष्णु-प्रियाय। ॐ नमः शिव-प्रियाय। ॐ नमः कामाक्षाय। ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं फट् स्वाहा।"

विधिः- धू□-दी□-नैवेद्य से □ूजा कर सवा लक्ष ज□ करें। लक्ष्मी आगमन एवं चमत्कार प्रत्यक्ष दिखाई देगा। रुके कार्य होंगे। लक्ष्मी की कृ□ा बनी रहेगी।